दिल्ली सल्तनत की स्थापना और सशक्तिकरण

इतिहास | बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

स्वामी विवेकानंद गर्ल्स कॉलेज, रूपनगढ़ व्याख्याता: श्री अमित कुमार

Made with GAMMA

अध्याय — 1

दिल्ली सल्तनत: एक परिचय

📅 काल-खंड

1206 से 1526 ई. तक भारत पर शासन करने वाली मुस्लिम सल्तनत

🏛️ पाँच वंश

गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैय्यद और **लोदी वंश** ने क्रमशः शासन किया

🌍 महत्व

भारत में **इस्लामी शासन** की नींव और मध्यकालीन इतिहास का प्रमुख अध्याय

Made with GAMMA

अध्याय — 2

भारत में तुर्कों का आगमन और पृष्ठभूमि

1

मध्य एशिया से आगमन

तुर्क मूलतः **मध्य एशिया** के घुमंतू योद्धा जनजाति थे

2

गज़नवी आक्रमण

महमूद गज़नवी (997–1030) ने 17 बार भारत पर हमला किया, धन लूटा

3

घुरिद शक्ति का उदय

घुरिद वंश ने स्थायी विजय का लक्ष्य रखा, लूट नहीं बल्कि राज्य स्थापना

Made with GAMMA

अध्याय — 3 एवं 4

मुहम्मद गोरी के आक्रमण और तराइन का द्वितीय युद्ध

1
1175 ई.
मुहम्मद गोरी का **पहला भारतीय अभियान** — मुल्तान व पंजाब पर कब्जा

2
1191 ई. — प्रथम युद्ध
तराइन का प्रथम युद्ध — पृथ्वीराज चौहान ने गोरी को पराजित किया

3
1192 ई. — द्वितीय युद्ध
तराइन का द्वितीय युद्ध — गोरी की निर्णायक जीत, पृथ्वीराज पराजित

4
परिणाम
उत्तर भारत में **तुर्की सत्ता** की स्थायी नींव पड़ी

तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.) भारतीय इतिहास का सबसे निर्णायक युद्ध माना जाता है — इसने भारत की राजनीतिक दिशा सदा के लिए बदल दी।

Made with GAMMA

अध्याय — 5

कुतुबुद्दीन ऐबक: दिल्ली सल्तनत की स्थापना

🏅 पृष्ठभूमि

गोरी का **विश्वस्त गुलाम सेनापति**; भारतीय विजय का संचालन किया

👑 सुल्तान घोषित

1206 ई. में गोरी की मृत्यु के बाद लाहौर में स्वतंत्र सुल्तान बना

🕌 स्थापत्य योगदान

कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद और **कुतुबमीनार** की नींव रखी

⏳ शासनकाल

मात्र **4 वर्ष** (1206–1210) का शासन, पर विरासत अतुलनीय

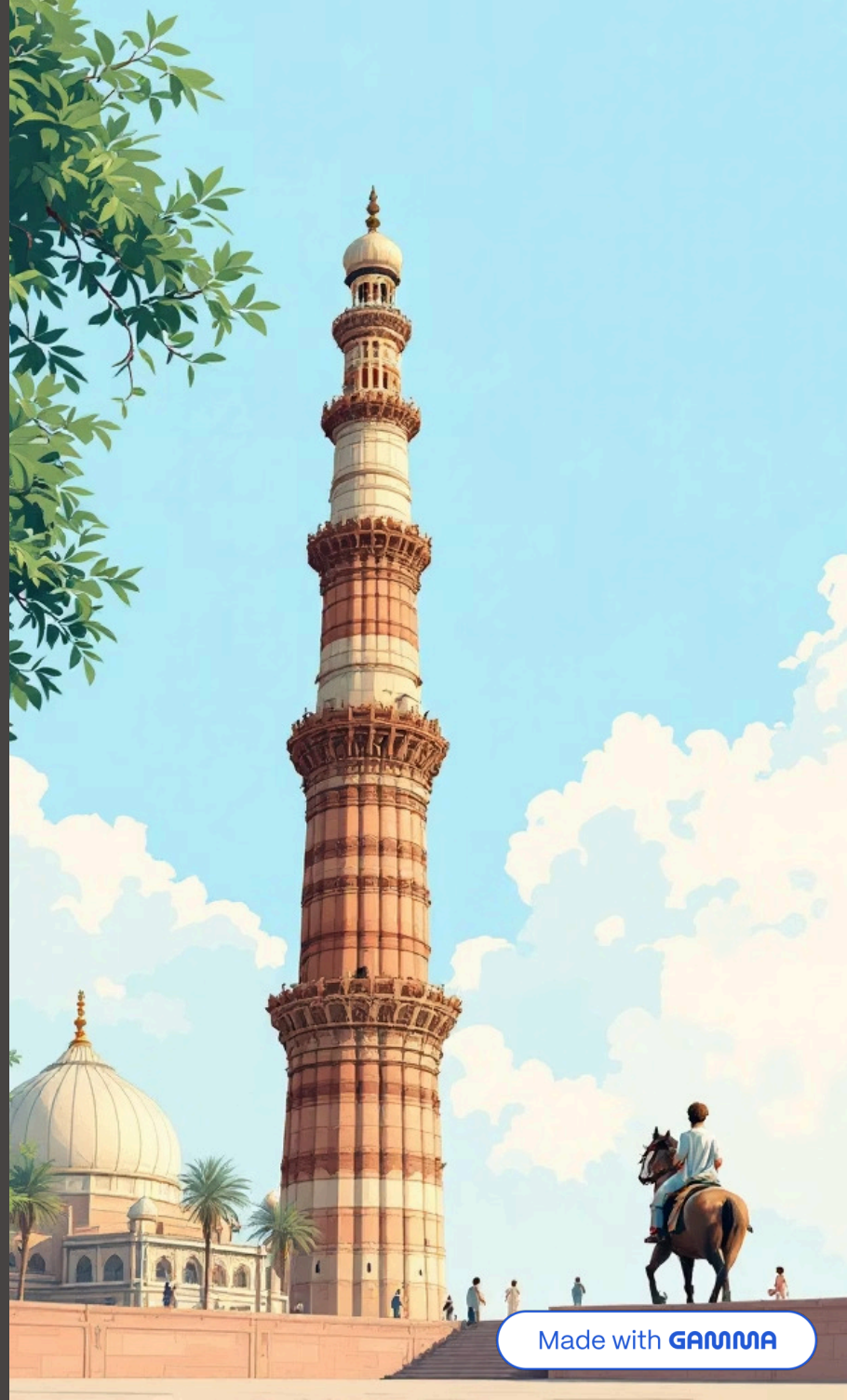

Made with GAMMA

अध्याय — 6 एवं 7

गुलाम वंश और इल्तुतमिश का सशक्तिकरण

गुलाम वंश की विशेषताएँ

1

दास-परंपरा

शासक **क्रय किए गए दास** थे जो अपनी योग्यता से सुल्तान बने

2

वैधता का संघर्ष

खलीफा की मान्यता प्राप्त करना सर्वोच्च प्राथमिकता थी

3

सैन्य श्रेष्ठता

केंद्रीय **तुर्की सेना** पर निर्भरता, इक्तादारी व्यवस्था लागू

इल्तुतमिश (1211–1236)

- **वास्तविक संस्थापक** — सल्तनत को संगठित व सुदृढ़ किया
- **खलीफा की मान्यता** प्राप्त की (1229 ई.) — वैधता स्थापित हुई
- **इक्ता प्रणाली** का विस्तार — प्रशासन की रीढ़ बनी
- **चालीसा (चहलगानी)** — 40 तुर्की अमीरों का शक्तिशाली दल

Made with GAMMA

रज़िया सुल्तान: एक साहसी शासिका

शासनकाल: 1236–1240 ई.

रज़िया, इल्तुतमिश की **योग्य पुत्री**, दिल्ली सल्तनत की एकमात्र महिला सुल्तान थीं।

1 पर्दा त्याग

बिना **पर्दे** के दरबार में आईं, घोड़े पर सवार होकर सेना का नेतृत्व किया

2 तुर्की अमीरों का विरोध

चहलगानी दल ने उनके शासन का विरोध किया और अंततः उन्हें पदच्युत किया

3 ऐतिहासिक महत्व

मध्यकालीन भारत में **महिला नेतृत्व** का अद्वितीय उदाहरण

Made with GAMMA

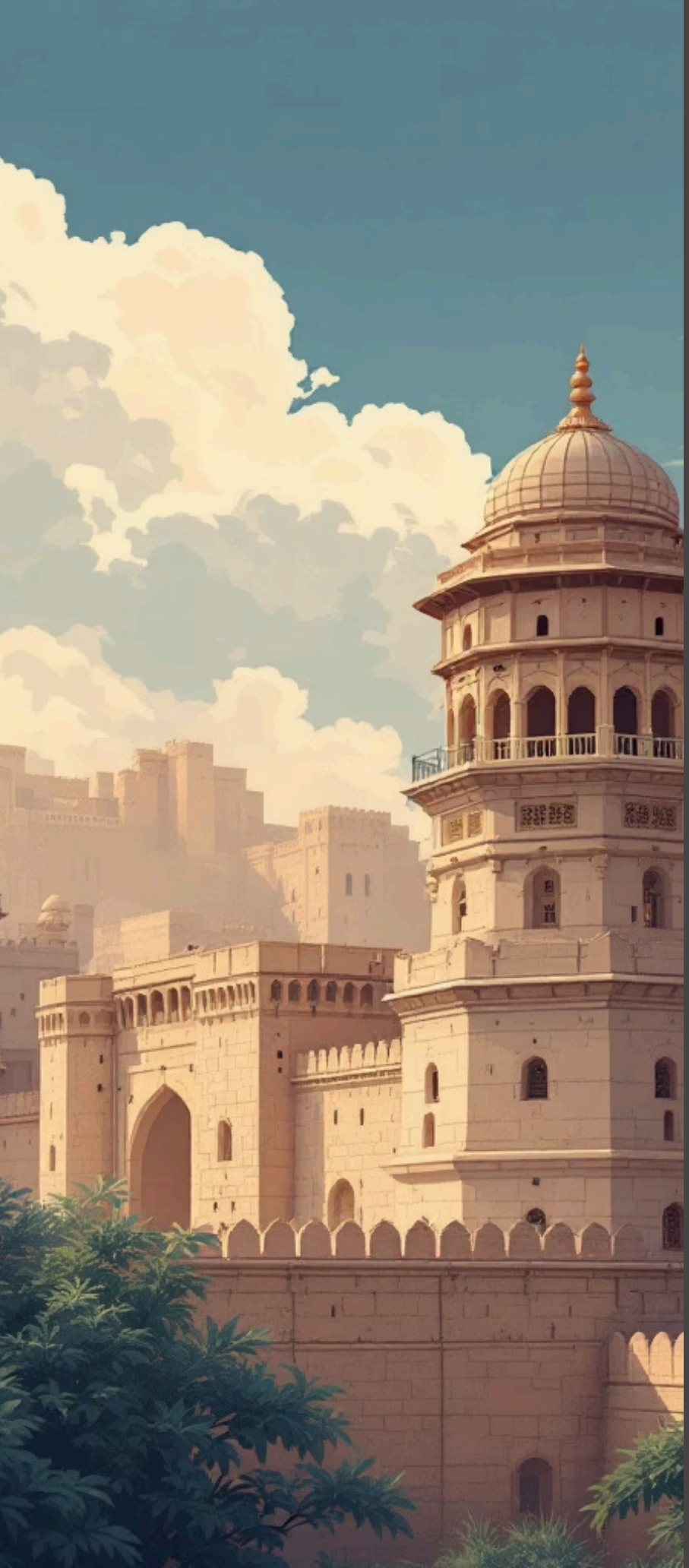

अध्याय — 9

बलबन की नीतियाँ और सत्ता का केंद्रीकरण

राजत्व सिद्धांत

ईश्वरीय अधिकार का सिद्धांत — सुल्तान को ईश्वर का प्रतिनिधि घोषित किया

चहलगानी का दमन

शक्तिशाली **चालीसा दल** को तोड़कर केंद्रीय सत्ता को मजबूत किया

गुप्तचर व्यवस्था

प्रत्येक प्रांत में **बरीद (जासूस)** नियुक्त किए — विद्रोह असंभव बना दिया

कठोर न्याय

सिजदा व पाबोस की प्रथा — दरबारी अनुशासन और आदर की कड़ी व्यवस्था

Made with GAMMA

अध्याय — 10 एवं 11

प्रशासनिक व्यवस्था और सैन्य संगठन

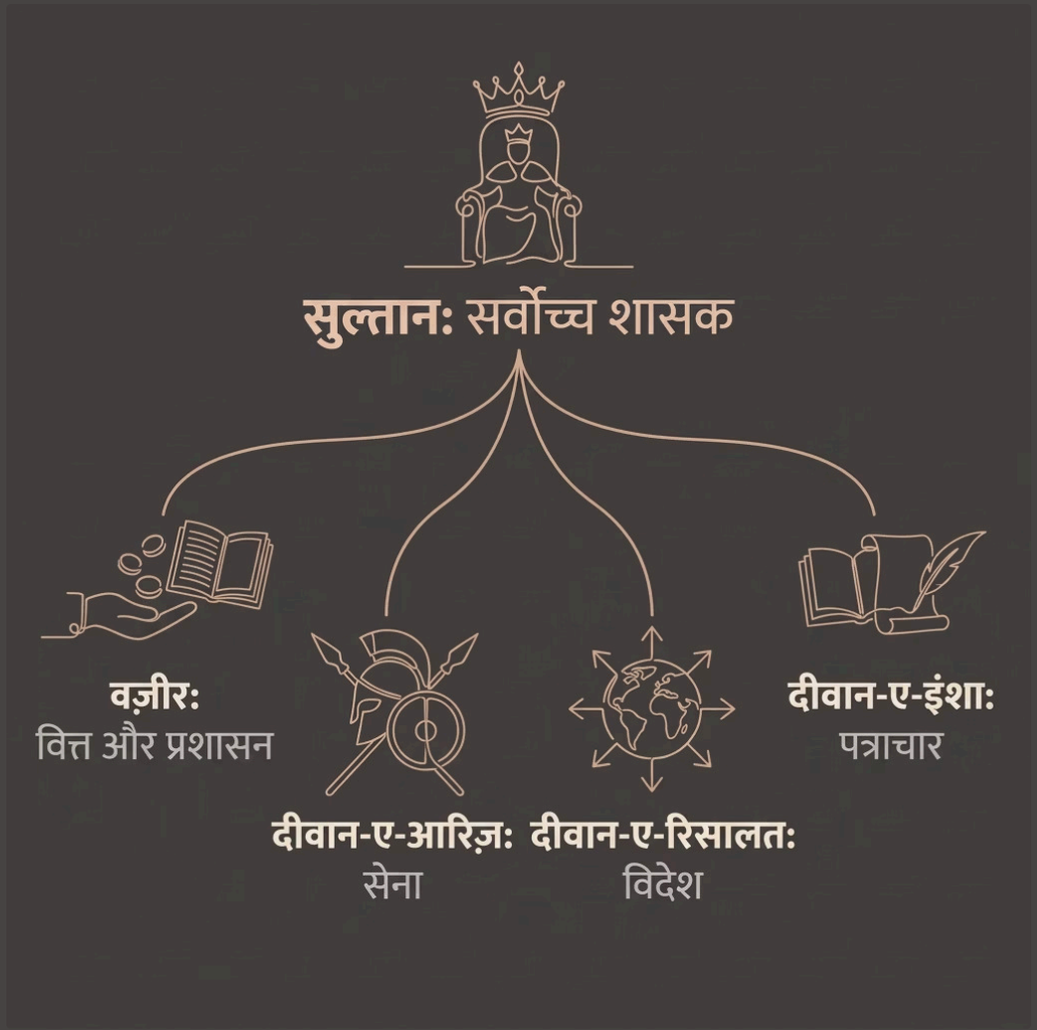

सैन्य संगठन की विशेषताएँ

- **केंद्रीय सेना (हश्म-ए-कल्ब)** — सुल्तान के सीधे नियंत्रण में
- **अश्वारोही सेना** — तुर्की घुड़सवार सल्तनत की मुख्य ताकत
- **दाग और हुलिया** प्रणाली — घोड़ों पर दाग लगाना, सैनिकों का विवरण
- **इक्तादारी सेना** — प्रांतीय इक्तादार अपनी सेना रखते थे

Made with GAMMA

निष्कर्ष

दिल्ली सल्तनत के सशक्तिकरण के प्रमुख कारण

सैन्य श्रेष्ठता

तुर्की **घुड़सवार सेना** और उन्नत युद्ध-कौशल ने भारतीय राजाओं को परास्त किया

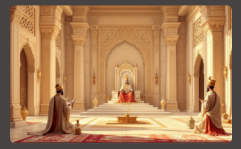

केंद्रीय प्रशासन

इक्ता प्रणाली और सुदृढ़ दीवानी व्यवस्था ने शासन को स्थायित्व दिया

धार्मिक वैधता

खलीफा की मान्यता और इस्लामी कानून ने सुल्तान के अधिकार को वैध बनाया

आर्थिक आधार

भू-राजस्व और **व्यापार-कर** से सुदृढ़ राजकोष ने सत्ता को बल दिया

सारांश: दिल्ली सल्तनत की स्थापना और सशक्तिकरण केवल सैन्य विजय नहीं, बल्कि कुशल प्रशासन, वैधानिक आधार और दूरदर्शी नीतियों का परिणाम था। यही इसे मध्यकालीन भारत का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय बनाता है।

Made with GAMMA